इकाई 4 हैरोड–डोमर मॉडल*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 हैरोड–डोमर मॉडल की पृष्ठभूमि

- 4.2.1 मॉडल के मूल तत्व
- 4.2.2 मॉडल की अवधारणाएँ

4.3 हैरोड मॉडल (HM)

- 4.3.1 मॉडल का प्रकथन
- 4.3.2 मॉडल की अवधारणाएँ
- 4.3.3 मॉडल के नीतिगत निहितार्थ
- 4.3.4 हैरोड मॉडल और व्यापार चक्र
- 4.3.5 हैरोड मॉडल की समालोचना

4.4 डोमर मॉडल (DM)

- 4.4.1 मॉडल का प्रकथन
- 4.4.2 मॉडल की अवधारणाएँ
- 4.4.3 मॉडल के नीतिगत निहितार्थ

4.5 हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल की तुलना

- 4.5.1 समानताएँ
- 4.5.2 असमानताएँ

4.6 हैरोड–डोमर विकास मॉडल (HDM)

- 4.6.1 मॉडल का सारतत्व
- 4.6.2 मॉडल की सीमाएँ

4.7 सारांश

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप इस योग्य होंगे कि –

- उस संदर्भ और पृष्ठभूमि का वर्णन कर सकें जिसमें यह मॉडल दो अर्थशास्त्रियों द्वारा विकसित किया गया था, जहाँ दोनों एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे, किंतु फिर भी समान परिणाम प्राप्त कर रहे थे;
- विकास प्रक्रिया में बचत एवं निवेश द्वारा निभाई गई भूमिका पर चर्चा कर सकें, जैसा कि हैरोड ने प्रतिपादित किया है, और इस संबंध के निहितार्थ पर चर्चा कर सकें;
- हैरोड मॉडल व डोमर मॉडल के बीच समानताओं एवं असमानताओं की पहचान कर सकें;
- हैरोड मॉडल व डोमर मॉडल संबंधी एक समेकित दृष्टिकोण विकसित कर सकें; तथा
- इस समेकित मॉडल की शक्तियों एवं सीमाओं का विश्लेषण कर सकें।

* इकाई 2 से अंगीकृत (एमईसी–004) किया गया है

4.1 प्रस्तावना

आर्थिक विकास, जैसा कि आप इकाई 3 में देख चुके हैं, किसी देश की वास्तविक राष्ट्रीय आय में निरंतर वृद्धि की प्रक्रिया को दर्शाता है। कई सिद्धांतों ने आर्थिक विकास की प्रक्रिया का अध्ययन करने का प्रयास किया है क्योंकि यह अतीत में विशेष रूप से मुक्त बाजार प्राधार के भीतर सामने आया है।

आर्थिक विकास के इन सिद्धांतों को विकास मॉडल के रूप में भी जाना जाता है, विशेषकर जब आर्थिक विकास की प्रक्रिया में निर्णायक चरों के बीच मात्रात्मक अंतर्संबंधों को परिशुद्ध रूप में निर्धारित किया जाता है।

इस खंड की शेष इकाइयों और उसके बाद के दो खंडों में हम विभिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा भिन्न–भिन्न समय बिंदु पर तैयार किए गए आर्थिक विकास के विभिन्न मॉडलों के विषय में गहराई से अध्ययन करेंगे। इनमें से प्रत्येक मॉडल एक अलग क्षेत्र या कारकों के एक समूह पर जोर देता है, जो कि उनके प्रतिपादकों के मत से आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक होता है।

इस इकाई को हम विकास के हैरोड–डोमर मॉडल (HDM) के रूप में जाने जाने वाले के गहन विश्लेषण के साथ आरंभ करते हैं।

4.2 हैरोड–डोमर मॉडल की पृष्ठभूमि

विकास का यह मॉडल दो भिन्न–भिन्न अर्थशास्त्रियों द्वारा विकसित किया गया था, जहाँ दोनों ही एक दूसरे से स्वतंत्र रूप से काम कर रहे थे, परंतु लगभग साथ–साथ ही। ये दो अर्थशास्त्री थे – आर.एफ. हैरोड तथा ई.डी. डोमर। निस्सन्देह, हैरोड ने अपने सिद्धांत को डोमर से पहले प्रकाशित किया था। हैरोड की पुस्तक *टूवर्ड्स ए डायनेमिक इकोनॉमिक्स* वर्ष 1948 में लंदन में प्रकाशित हुई थी, जबकि डोमर की पुस्तक *एसेज इन थ्योरी ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथ* वर्ष 1957 में न्यूयॉर्क में प्रकाशित हुई थी।

हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल अपने–अपने विवरण में भिन्न हो सकते हैं, परंतु दोनों मॉडलों में निहित विचार इतने समान हैं कि दोनों मॉडल एकीकृत हो गए हैं और अधिक सामान्य रूप से एकल संयुक्त मॉडल के रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं, जिसे हैरोड–डोमर मॉडल (HDM) के रूप में जाना जाता है।

उक्त मॉडल (HDM) ने आर्थिक विकास के क्लासिकल और केन्जियन विश्लेषण को एकीकृत किया। इस मॉडल में, पूँजी संचय आर्थिक विकास की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। क्लासिकल और केन्जियन दोनों अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास की प्रक्रिया में पूँजी संचय की महत्वपूर्ण भूमिका को ही मान्यता दी थी। किंतु क्लासिकल अर्थशास्त्रियों ने केवल पूँजी संचय की क्षमता पर विचार किया, और यह मानते हुए कि आपूर्ति ने अपनी माँग स्वयं बनाई, माँग पक्ष पर ध्यान नहीं दिया।

दूसरी ओर, केन्जियन अर्थशास्त्रियों ने विपरीत दिशा में गलती की। मुख्य रूप से अल्पावधि से ही सरोकार रखकर उन्होंने केवल माँग की पर्याप्तता पर ही विचार किया और दीर्घावधि में निवेश के माध्यम से क्षमता में वृद्धि संबंधी समस्या की उपेक्षा की। इस मॉडल (HDM) ने निवेश प्रक्रिया के दोनों पक्षों पर विचार किया।

4.2.1 मॉडल के मूल तत्व

आय के पूर्ण नियोजन संतुलन स्तर से शुरू करते हुए उक्त मॉडल (HDM) ने यह स्वयं सिद्ध मान लिया कि इस साम्यावस्था के निरंतर संधारण के लिए आवश्यक होगा कि

निवेश द्वारा उत्पन्न व्यय की मात्रा निवेश से परिणत बढ़े हुए उत्पादन को समाहित करने के लिए पर्याप्त हो।

बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति को देखते हुए जितनी अधिक पूँजी जमा होती है, प्रारंभिक राष्ट्रीय आय उतनी ही अधिक होती है। यहाँ निवल निवेश की पूर्ण मात्रा भी अधिक ही होगी, अतएव पूर्ण नियोजन के संधारण हेतु निवल निवेश की निरंतर बढ़ती राशि की आवश्यकता होगी। इसके परिणामस्वरूप वास्तविक राष्ट्रीय आय में निरंतर वृद्धि की आवश्यकता होगी। पूँजी संचय और आय में वृद्धि साथ–साथ ही होने चाहिए।

पूँजी में वृद्धि से अर्थव्यवस्था की उत्पादक क्षमता का विस्तार होता है। यदि वह आय में वृद्धि के साथ नहीं होगी तो निम्नलिखित में से कोई भी परिणाम हो सकता है –

- नई पूँजी बेनाम रह सकती है;
- नई पूँजी पुरानी पूँजी का स्थान लेकर उसको अपने श्रम व/या बाजारों से वंचित कर सकती है; अथवा
- नई पूँजी को श्रम (व संभवतः अन्य कारकों) से प्रतिस्थापित किया जा सकता है।

इस प्रकार, आय में वृद्धि के साथ पूँजी में वृद्धि के परिणामस्वरूप पूँजी व/या श्रम का अपनियोजन होगा। अत्यधिक पूँजी संचय के फलस्वरूप अत्युत्पादन हो सकता है और इसके परिणामस्वरूप निवेश में गिरावट आ सकती है, जो कि व्यापार मंदी की ओर ले जा सकता है।

4.2.2 मॉडल की अवधारणाएँ

हैरोड–डोमर मॉडल (HDM) निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है –

1. आय का प्रारंभिक पूर्ण–रोजगार स्तर विद्यमान होता है।
2. अर्थव्यवस्था के कामकाज में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता।
3. बहिर्जात कारक विकास चरों को प्रभावित नहीं करते हैं, यथा यह एक बंद अर्थव्यवस्था मॉडल होता है।
4. समायोजन में कोई अंतराल नहीं होता, यथा बचत, निवेश, आय, व्यय जैसे आर्थिक चर उसी अवधि में स्वयं को समायोजित करते हैं। बचत में कोई भी परिवर्तन उसी अवधि में निवेश में तदनुरूपी परिवर्तन लाता है।
5. बचत करने की औसत प्रवृत्ति (S/Y) और बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति ($\Delta S/\Delta Y$) एक दूसरे के बराबर होते हैं, यथा बचत में पूर्ण परिवर्तन बचत में सापेक्ष परिवर्तन के बराबर होता है।
6. बचत करने की प्रवृत्ति और ''पूँजी गुणांक'' (पूँजी–उत्पादन अनुपात) स्थिर रहते हैं। पूँजी–उत्पादन अनुपात की स्थिरता के कारण निरंतर लाभ प्राप्ति का नियम लागू होता है।
7. आय, निवेश और बचत सभी अपने निवल अर्थ में परिभाषित होते हैं। इसका तात्पर्य है कि ये चर मूल्यह्रास को अपवर्जित करते हैं।
8. बचत और निवेश प्रत्याशित एवं पूर्व–व्यापी अर्थों में एक समान होते हैं, यथा बचत और निवेश के बीच लेखांकन एवं फलनिक समानता देखी जाती है। इस समानता को निम्नवत् व्यक्त किया जा सकता है –

$$S_0 = I_0 \text{ (लेखा समानता)}$$

$$S_e = I_e \text{ (फलनिक समानता)}$$

चर S_0 और I_0 को बचत और निवेश के रूप में देखा जाता है। चर S_e और I_e से बचत और निवेश की अपेक्षा की जाती है। समस्या के अंतिम समाधान के लिए उपर्युक्त सभी अवधारणाएँ आवश्यक नहीं होतीं; फिर भी वे विश्लेषण को सरल बनाने के उद्देश्य को पूरा करती हैं।

4.3 हैरोड मॉडल (HM)

अंग्रेजी अर्थशास्त्री सर हेनरी रॉय फोर्ब्स हैरोड ने अपने मॉडल में यह दिखाने का प्रयास किया कि किसी अर्थव्यवस्था में कितनी नियमित (यथा, साम्यावस्था) वृद्धि हो सकती है। एक बार जब नियमित विकास बाधित हो जाता है और अर्थव्यवस्था असंतुलन में आ जाती है तो संचयी शक्तियाँ इस विचलन को कायम रखती हैं, जिससे या तो अनंत अपस्फीति होती है या फिर अनंत मुद्रास्फीति।

दूसरे शब्दों में, हैरोड के विकास मॉडल ने मुख्यतः निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित किया –

- नियत पूँजी–उत्पादन अनुपात (पूँजी गुणांक) और नियत बचत–आय अनुपात (बचत करने की प्रवृत्ति) के साथ नियमित विकास दर कैसे प्राप्त की जा सकती है?
- नियमित विकास दर को कैसे बनाए रखा जा सकता है अथवा स्थिर विकास को बनाए रखने के लिए क्या शर्तें हैं?
- प्राकृतिक कारक अर्थव्यवस्था की विकास दर को किस प्रकार निर्धारित करते हैं?

उक्त मॉडल (HM) उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर देने का ही प्रयास करता है।

4.3.1 मॉडल का प्रकथन

हैरोड मॉडल (HM) तीन प्रकार की विकास दरों पर आधारित है, यथा –

- *प्रथम,* चर G द्वारा निरूपित दर **वास्तविक विकास दर** होती है। यह बचत अनुपात और पूँजी–उत्पादन अनुपात द्वारा निर्धारित की जाती है। यह विकास की दर में अल्पकालिक चक्रीय भिन्नता को दर्शाता है।
- *द्वितीय,* G_w द्वारा निरूपित दर **अनुबद्ध विकास दर** होती है। यही किसी भी अर्थव्यवस्था में आय की पूर्ण–क्षमता वृद्धि दर होती है।
- *तृतीय,* G_n द्वारा निरूपित दर **स्वाभाविक विकास दर** होती है। इसे 'कल्याण इष्टतम' माना जाता है। इसको विकास की संभावित अथवा पूर्ण नियोजन दर भी कहा जा सकता है।

- **वास्तविक विकास दर** (G) : उक्त मॉडल (HM) में पहला मौलिक समीकरण निम्नवत् होता है –

$$GC = s \qquad \ldots (4.1)$$

जहाँ,

G = विकास की वास्तविक दर (या $\Delta Y/Y$)

C = सीमांत पूँजी–उत्पादन अनुपात [या $(I/\Delta Y)$]

s = बचत आय अनुपात [या (S/Y)]

समीकरण (4.1) इस सरल तथ्य की व्याख्या करता है कि अनुपात के संदर्भ में बचत और निवेश एक दूसरे के बराबर होते हैं। इस समीकरण (4.1) में G, C और s के मानों को प्रतिस्थापित

करने पर इस परिघटना की व्याख्या निम्नवत् होती है –

$$GC = s$$

उक्त मानों को प्रतिस्थापित करने पर हमें प्राप्त होता है –

$$(\Delta Y/Y) \times (I/\Delta Y) = S/Y$$

$$\frac{\Delta Y}{Y} \times \frac{I}{\Delta Y} = \frac{S}{Y}$$

या

$$= \frac{I}{Y} = \frac{S}{Y}$$

या $I = S$

इस प्रकार, बचत और निवेश (निर्यात के अर्थ में) के बीच समानता नियमित विकास लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक शर्त है। इसे 'गतिशील साम्यावस्था' भी कहा जाता है।

- **अनुबद्ध विकास दर (G_w)** : यह किसी भी अर्थव्यवस्था में आय की पूर्ण–क्षमता वृद्धि दर होती है। इसे 'पूर्ण–नियोजन वृद्धि दर' अथवा 'संभावित वृद्धि दर' के रूप में भी जाना जाता है। अनुबद्ध विकास के समीकरण को निम्नानुसार लिखा जा सकता है –

$$G_w C_r = s \qquad \ldots (4.2)$$

जहाँ,

G_w = अनुबद्ध विकास दर

C_r = अनुबद्ध विकास दर को बनाए रखने के लिए आवश्यक पूँजी की राशि

s = बचत–आय अनुपात

समीकरण (4.2) में कहा गया है कि यदि अर्थव्यवस्था को G_w की ऐसी नियमित दर से आगे बढ़ना हो जो अपनी क्षमता का पूरी तरह से उपयोग कर सके तो आय में प्रति वर्ष s / C_r की दर से वृद्धि होनी चाहिए, यथा –

$$G_w = s / C_r$$

यदि आय अनुबद्ध दर से बढ़ती है तो अर्थव्यवस्था के पूँजीगत स्टॉक का पूरी तरह से उपयोग किया जाएगा – उद्यमी पूर्ण संभावित आय पर सृजित बचत की राशि का निवेश जारी रखने के इच्छुक होंगे। पद G_w इसीलिए विकास की एक आत्मनिर्भर दर दर्शाता है और यदि अर्थव्यवस्था इस दर से बढ़ती रहती है तो यह चित्र 4.1 में दर्शाए गए संतुलन पथ का अनुसरण करेगी।

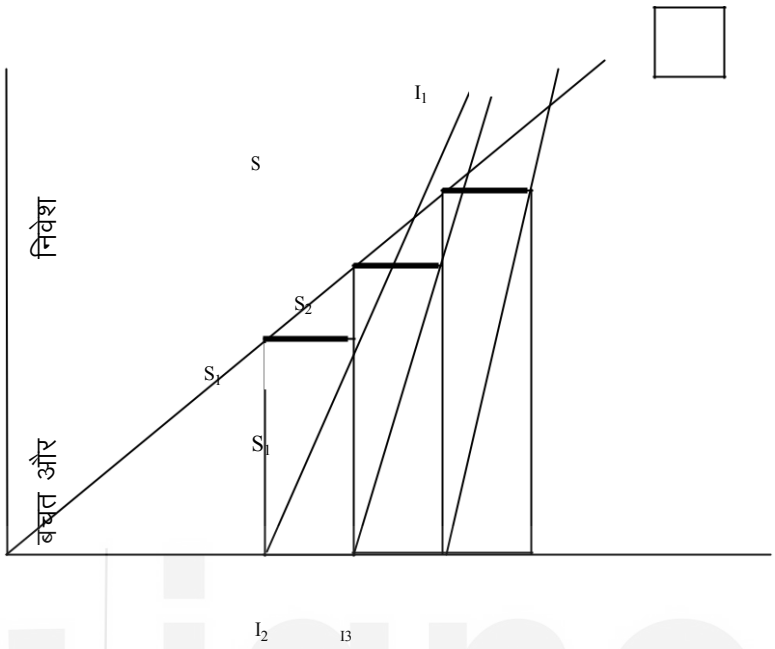

चित्र 4.1: आय, बचत और निवेश

चित्र 4.1 में आय को क्षैतिज अक्ष के साथ मापा जाता है और बचत एवं निवेश को ऊर्ध्वाधर अक्ष के साथ मापा जाता है। आप देखेंगे कि Y_1 से Y_2 तक उत्प्रेरित निवेश की आय में परिवर्तन $A(Y_2)$ पर बचत S_1 के बराबर होगा।

इस निवेश ने, बदले में, आय को Y_3 तक बढ़ा दिया और Y_3 ने I_2 को $B(Y_3)$ पर बचत S_2 के बराबर करने के लिए प्रेरित किया।

पद I_2 ने बदले में आय को Y_4 तक बढ़ा दिया और Y_4 ने I_3 को $C(Y_4$ आय) पर बचत S_3 के बराबर करने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, अर्थव्यवस्था विकास के पथ पर आगे बढ़ती है।

निवेश रेखा के प्रतिच्छेदन बिंदु और Y–अक्ष के समानांतर चलने वाली रेखा ने आगामी वांछित निवेश का संकेत दिया।

बचत का अनुपात जितना अधिक होगा, उत्पादन में वृद्धि की दर उतनी ही अधिक होनी चाहिए ताकि साम्यावस्था बनाए रखने के लिए पर्याप्त निवेश को प्रेरित किया जा सके, बशर्ते हम निवेश गुणांक में शून्य परिवर्तन मानकर चलते हों।

संक्षेप में, मॉडल में अनुबद्ध विकास दर समीकरण का तात्पर्य है कि वास्तविक निवेश (पूर्व–व्यापी निवेश) अपेक्षित निवेश (प्रत्याशित निवेश) के बराबर होना चाहिए, बशर्ते कोई अर्थव्यवस्था स्थिर विकास लक्ष्य प्राप्त करना चाहती हो। ऐसी स्थिति में हमें निम्नलिखित समानताएँ प्राप्त होंगी –

$$G = G_w$$

तथा

$$C = C_r$$

तदनुसार अर्थव्यवस्था साम्यावस्था में होगी।

यदि ये समानताएँ प्राप्त नहीं होती हैं तो अर्थव्यवस्था को असंतुलन की स्थिति में धकेल दिया जाएगा, बशर्ते निम्नलिखित में से कोई भी स्थिति प्राप्त होती हो –

1. $G > G_w$

   अथवा

   $C < C_r$

2. $G < G_w$

   अथवा

   $C > C_r$

- **असंतुलन की स्थिति जब $G > G_w$**

इस स्थिति में आय की वृद्धि दर उत्पादन की वृद्धि दर से अधिक होती है। इसका अर्थ है कि उत्पादन की माँग (आय के उच्च स्तर के कारण) उत्पादन की आपूर्ति (उत्पादन के निम्न स्तर के कारण) से अधिक हो जाएगी। फलतः अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की स्थिति दिखाई देगी।

दूसरे शब्दों में, यदि $C < C_r$ हो तो पूँजी की वास्तविक राशि पूँजी की वांछित राशि से कम हो जाती है। इससे पूँजी का अभाव उत्पन्न होगा। यह बदले में उत्पादित होने वाले माल पर प्रतिकूल प्रभाव डालेगा। उत्पादन में गिरावट से उत्पादित होने वाले माल पर दुष्प्रभाव पड़ेगा अर्थात् इस गिरावट के परिणामस्वरूप माल की कमी होगी, और इसलिए मुद्रास्फीति की स्थिति पैदा होगी।

उपर्युक्त दोनों में से कोई भी तरीका मुद्रास्फीति की ओर ही ले जाता है, और मुद्रास्फीति की स्थिति में विकास स्थिर नहीं होता।

- **असंतुलन की स्थिति जब $G < G_w$**

इस स्थिति में आय की वृद्धि दर उत्पादन की वृद्धि दर से कम होती है। बिक्री के लिए अधिक माल होगा परंतु इस माल को खरीदने के लिए आय अपर्याप्त होगी। माँग में कमी आएगी और अर्थव्यवस्था को अत्युत्पादन की समस्या का सामना करना पड़ेगा।

इसी प्रकार, जब $C > C_r$ हो तो पूँजी की वास्तविक राशि निवेश के लिए वांछित पूँजी की मात्रा से अधिक होगी। निवेश के लिए उपलब्ध पूँजी की अधिक मात्रा दीर्घावधि में पूँजी की सीमांत दक्षता को कम कर देगी। पूँजी की सीमांत दक्षता में दीर्घावधिक गिरावट से व्यापार मंदी और बेरोजगारी की स्थिति पैदा होगी।

व्यापार मंदी की स्थिति में आर्थिक विकास स्थिर नहीं हो सकता।

हैरोड ने कहा कि एक बार g के G_w से निकल जाने के बाद वह साम्यावस्था से और दूर हो जाएगा। उन्होंने लिखा – ''वृद्धि की उस रेखा के आसपास होना जिसके अनुसार वह हो रही थी, ही अकेले संतुष्टि देता है, केंद्र से दूर जाने वाली शक्तियाँ सक्रिय हो जाती हैं, जिससे व्यवस्था वृद्धि की रेखा उत्तरोत्तर दूर होती जाती है।'' इस प्रकार, G और G_w के बीच साम्यावस्था अत्यधिक संतुलित अवस्था कहलाती है। अतएव सार्वजनिक नीति के प्रमुख कार्यों में से एक दीर्घावधि तक स्थिरता बनाए रखने के लिए G और G_w को एक साथ लाना ही होता है।

इस प्रयोजन से ही हैरोड ने विकास की स्वाभाविक दर संबंधी अपनी तीसरी अवधारणा प्रस्तुत की।

- **स्वाभाविक विकास दर (G_n)** : यह वह अधिकतम विकास दर है जिसे कोई अर्थव्यवस्था अपने उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों से प्राप्त कर सकती है। स्वाभाविक विकास दर का समीकरण निम्नवत् दर्शाया जा सकता है –

$$G_n C_r = \text{या} \neq s \qquad \ldots (4.3)$$

इसमें कहा गया है कि स्वाभाविक विकास दर जनसंख्या, प्रौद्योगिकी, प्राकृतिक संसाधनों एवं पूँजीगत उपकरणों जैसे समष्टिक चरों द्वारा निर्धारित की जाती है। ये कारक एक ऐसी सीमा निर्धारित कर देते हैं जिसके आगे उत्पादन का विस्तार संभव नहीं होता।

चर G, G_w और G_n के बीच परस्पर क्रिया

चर G_w और G_n की तुलना कर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि चर G_n चर G_w के बराबर हो भी सकता है और नहीं भी। यदि चर G_n चर G_w के बराबर होता है तो स्थिर वृद्धि की स्थिति अभिभावी होगी। किंतु ऐसी संभावना दूर की कौड़ी ही है क्योंकि अनेक प्रकार के कारक (चर G_n और G_w को प्रभावित करने वाले) अमल में आते हैं और इन दो विकास दरों के बीच संतुलन को दुष्कर बना देते हैं। चर G_n और G_w के बीच असमानता की अधिक संभावना विद्यमान होती है। यह दो पदों के रूप में सामने आ सकता है, यथा –

- $G_w > G_n$
- $G_n > G_w$
- **$G_w > G_n$** : यदि चर G_w चर G_n से अधिक हो तो चर G अधिकांश समय चर G_n से नीचे ही रहेगा। इस स्थिति में संचयमान मंदी की प्रवृत्ति दिखाई देगी। शीघ्र ही अधोमुखी रुझान दृष्टिगत होगा, जिसके परिणामस्वरूप बेरोजगारी और व्यापार मंदी का प्रकोप होगा। हालाँकि, अधोमुखी प्रवृत्ति अनिश्चित काल तक जारी नहीं रह सकती है। कारण यह है कि व्यापार मंदी की निम्नतम सीमा न्यूनतम उपभोग स्तर से निर्धारित की जाती है। उपभोग किसी न्यूनतम स्तर से नीचे नहीं गिर सकता है। कार्यशील पूँजी को कम करके न्यूनतम उपभोग आवश्यकताओं को संभव बनाया जा सकता है। उद्यमी इस आशा में अचल पूँजी को कम नहीं कर सकते हैं कि भविष्य में निवेश के लिए उज्ज्वल संभावनाएँ हो सकती हैं। ये दो कारक धीरे–धीरे सुधार के पहियों को गति में लाते हैं, और अर्थव्यवस्था में ऊर्ध्वमुखी रुझान का अनुभव होने लगता है।
- **$G_n > G_w$** : इस स्थिति में चर G भी अधिकांश समय G_w से अधिक रहेगा। संचयमान उत्कर्ष और पूर्ण नियोजन की प्रवृत्ति दिखाई देगी। ऐसी स्थिति मुद्रास्फीतिकारी रुझान पैदा करेगी। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए बचत को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए क्योंकि इससे मुद्रास्फीतिकारी दबाव के बिना उच्च स्तर का रोजगार सुनिश्चित होगा।

4.3.2 मॉडल की अवधारणाएँ

हैरोड मॉडल (HM) निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है –

- प्रत्याशित कुल बचत का स्तर कुल आय का एक स्थिर अनुपात होता है। इसका अर्थ है कि बचत करने की प्रवृत्ति को स्थिर माना जाता है।
- तकनीकी प्रगति को श्रम संवर्धक अथवा 'तटस्थ' माना गया है। इसका तात्पर्य यह है कि तटस्थ तकनीकी प्रगति ही इस मॉडल का आधार है।
- उत्पादन की प्रति इकाई पूँजी और श्रम की आवश्यकताएँ स्थिर होती हैं, यथा पूँजी–उत्पादन अनुपात और श्रम–उत्पादन अनुपात को स्थिर माना जाता है।

- निरंतर अनुमापी प्रतिफल प्राप्त होता है। इसका तात्पर्य यह है कि उत्पादन में नियत दर से वृद्धि होती है।

4.3.3 मॉडल के नीतिगत निहितार्थ

हैरोड मॉडल (HM) के नीतिगत निहितार्थ सरल और सीधे हैं। इन्हें संक्षेप में निम्नानुसार कहा जा सकता है –

- किसी भी मुद्रास्फीतिकारी अंतराल अर्थव्यवस्था में बचत एक गुण होता है और किसी भी अपस्फीतिकारी अंतराल अर्थव्यवस्था में यही एक दोष कहलाती है।
- किसी भी उन्नत अर्थव्यवस्था में बचत गुणांक, s, को स्थिति की माँग के अनुसार ऊपर अथवा नीचे ले जाना पड़ता है।

4.3.4 हैरोड मॉडल और व्यापार चक्र

हैरोड ने अपने मॉडल का उपयोग व्यापार चक्रों को समझाने के लिए किया है। पुनर्प्राप्ति चरण में अनियोजित संसाधनों के अस्तित्व के कारण $G > G_n$ होता है। जब अर्थव्यवस्था पूर्ण नियोजन स्तर पर पहुँच जाती है तो $G = G_n$ हो जाता है। यदि G_w पूर्ण नियोजन स्तर पर G_n से अधिक होता है तो मंदी अपरिहार्य होती है। चूँकि G को G_w से नीचे गिरना पड़ा था, इसे भी कुछ समय के लिए उत्तरोत्तर नीचे की ओर ले जाया जाएगा। इसके अलावा, व्यापार चक्र के दौरान स्वयं G में ही उतार–चढ़ाव देखा गया। आय के एक अंश के रूप में बचत, यद्यपि दीर्घावधि में काफी स्थिर रहती है, अल्पावधि में उतार–चढ़ाव दर्शाती है। अल्पावधि में बचत अर्जन और सामान्य उपभोग के बीच शेष रह जाती है।

कंपनियाँ भी निवल प्राप्तियों में अपनी अल्पावधिक वृद्धि के एक बड़े हिस्से को बचाने की संभावना दर्शाती हैं। तदनुसार भले ही G_w सामान्य रूप से G_n से नीचे हो, यह आगे के चरणों में G_n से ऊपर ही चले जाने की संभावना रखता है, और यदि ऐसा होता है तो पूर्ण नियोजन स्तर प्राप्त होने पर मंदी का एक दुष्चक्र अपरिहार्य हो जाता है।

यदि G_w वृद्धि के दौरान G_n से ऊपर नहीं जा पाता है तो पूर्ण नियोजन स्तर प्राप्त होने पर वृद्धि करने का दबाव बना रहेगा – यह मुद्रास्फीति की ओर ले जाएगा और फलस्वरूप, देर–सबेर, G_w चर G_n से ऊपर चला जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप अंततः मंदी का एक दुष्चक्र बन जाएगा।

वस्तुतः गतिहीनता, घर्षण और बाधाओं के कारण रोजगार तक पहुँचने से पहले G को कम किया जा सकता है और यदि ऐसा होता है तो पूर्ण नियोजन स्तर तक पहुँचने से पहले ही मंदी का प्रकोप हो सकता है। यदि G_w चर G_n से बहुत ऊपर हो तो पुनरुत्थान के दौरान G कभी भी G_w से ऊपर नहीं उठ सकता है और पूर्ण नियोजन स्तर तक पहुँचने से पहले ही मंदी का प्रकोप हो सकता है।

4.3.5 हैरोड मॉडल की समालोचना

हैरोड के मॉडल में अस्थिरता उसकी मूल अवधारणाओं की अनम्यता के कारण है, यथा नियत उत्पादन फलन, नियत बचत अनुपात और श्रम शक्ति की नियत वृद्धि दर। अर्थशास्त्रियों ने उत्पादन फलन में पूँजी और श्रम प्रतिस्थापन की अनुमति देकर बचत अनुपात को लाभ दर और श्रम शक्ति की वृद्धि दर को विकास प्रक्रिया में एक चर के रूप में प्रस्तुत कर इस कठोरता को दूर करने का प्रयास किया है।

बोध प्रश्न 1

1) इस इकाई में चर्चा किए गए मॉडल को हैरोड–डोमर मॉडल के रूप में क्यों जाना जाता है?

.....

.....

.....

.....

2) विकास के हैरोड मॉडल की मूल अवधारणाओं का संक्षेप में वर्णन करें।

.....

.....

.....

.....

3) हैरोड मॉडल व्यापार चक्रों की परिघटना की व्याख्या किस प्रकार करता है?

.....

.....

.....

.....

4.4 डोमर मॉडल (DM)

वह मौलिक प्रश्न जिसके इर्द–गिर्द रूसी–अमेरिकी अर्थशास्त्री एव्सी डेविड डोमर ने अपने मॉडल की रचना की, निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है –

'जब निवेश से उत्पादक क्षमता और आय में वृद्धि हो रही हो, निवेश में वृद्धि की दर क्या होनी चाहिए, जो कि आय में वृद्धि और उत्पादक क्षमता में वृद्धि दोनों बराबर कर दे ताकि पूर्ण नियोजन स्तर बना रहे?'

डोमर ने निवेश के माध्यम से कुल आपूर्ति और कुल माँग के बीच एक कड़ी गढ़कर इस प्रश्न का उत्तर दिया है।

4.4.1 मॉडल का प्रकथन

डोमर मॉडल (DM) निवेश के दोहरे चरित्र पर आधारित है – एक, निवेश से उत्पादक क्षमता बढ़ती है, और दूसरा, निवेश से उत्पन्न आय। निवेश के दोनों पक्ष स्थिर विकास के लिए समाधान प्रदान करते हैं। इस मॉडल में निम्नलिखित संकेताक्षरों का प्रयोग किया जाता है –

Y_d = राष्ट्रीय आय का स्तर अथवा पूर्ण नियोजन पर प्रभावी माँग का स्तर (माँग पक्ष)

Y_s = पूर्ण नियोजन स्तर पर उत्पादक क्षमता अथवा आपूर्ति का स्तर (आपूर्ति पक्ष)

K = वास्तविक पूँजी

I = निवल निवेश, जिसका अर्थ है वास्तविक पूँजी के स्टॉक में परिवर्तन, यथा ΔK

d = बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति, जो कि गुणक का व्युत्क्रम है, यथा (mp λ = 1/गुणक)

σ = पूँजी की उत्पादकता

हम इन संकेताक्षरों का प्रयोग ऐसे समीकरणों की कोई शृंखला तैयार करने के लिए कर सकते हैं जो इस मॉडल की रचना करने में मदद करते हैं।

निवेश के माँग पक्ष को समीकरण (4.4) द्वारा निम्नानुसार दर्शाया जा सकता है –

$$Y_d = I/d \quad \ldots (4.4)$$

यह समीकरण (4.4) उक्त दो तथ्यों की व्याख्या इस प्रकार करता है –

1) प्रभावी माँग का स्तर (Y_d) सीधे निवेश के स्तर (I) से संबंधित होता है। निवेश में वृद्धि के परिणामस्वरूप प्रभावी माँग में वृद्धि होगी, और इसका विलोम भी सत्य है।
2) प्रभावी माँग बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति (d) से विपरीत रूप से संबंधित होती है। बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति में वृद्धि से प्रभावी माँग के स्तर में कमी आएगी और इसका विलोम भी सत्य है।

समीकरण (4.4) निवेश के माँग पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है।

निवेश के आपूर्ति पक्ष को समीकरण (4.5) द्वारा निम्नानुसार दर्शाया जा सकता है –

$$Y = \sigma k \quad \ldots (4.5)$$

समीकरण (4.5) के अनुसार पूर्ण नियोजन स्तर पर उत्पादन (Y_s) की आपूर्ति दो कारकों पर निर्भर करती है, यथा पूँजी की उत्पादक क्षमता (σ) और वास्तविक पूँजी की मात्रा (K)।

इनमें से किसी की भी आपूर्ति में परिवर्तन के फलस्वरूप उत्पादन की आपूर्ति में एक समान परिवर्तन होगा। उदाहरण के लिए, पूँजी की उत्पादकता में वृद्धि के परिणामस्वरूप उत्पादन में वृद्धि होगी, और इसका विलोम भी सत्य है। इसी प्रकार, वास्तविक पूँजी की मात्रा में वृद्धि से उत्पादन में वृद्धि होगी, और इसका विलोम भी सत्य है।

साम्यावस्था : साम्यावस्था में माँग और आपूर्ति संतुलित होनी चाहिए। अतएव,

$$Y_d = Y_s$$

या $I/d = \sigma K$

वज्र–गुणन से,

$$I = d\sigma K \quad \ldots (4.6)$$

समीकरण (4.6) नियमित वृद्धि की शर्त की व्याख्या करता है।

नियमित वृद्धि तब संभव होती है जब निवेश बचत–आय अनुपात, पूँजी उत्पादकता और पूँजीगत स्टॉक के गुणनफल के बराबर होता है।

इससे नियमित वृद्धि को बनाए रखने की शर्त को समझाया जा सकता है। इसके लिए हमें ऊपर दी गई माँग और आपूर्ति की शर्तों में वृद्धि करनी होगी।

अपने अभिवर्धी रूप में माँग समीकरण को निम्नानुसार लिखा जा सकता है –

$$\Delta Yd = \Delta I/d \quad \ldots (4.7)$$

आप देखेंगे कि वृद्धि को प्रभावी माँग और निवेश के स्तर में दर्शाया गया है क्योंकि वे चर हैं, परंतु वृद्धि को d में नहीं दर्शाया गया है क्योंकि वह प्रयुक्त अवधारणाओं के संदर्भ में नियत है।

आपूर्ति समीकरण को अपने अभिवर्धी रूप इस प्रकार लिखा जा सकता है –

$$\Delta Y_s = \sigma \Delta K \qquad \ldots (4.8)$$

समीकरण (4.8) के अनुसार उत्पादन की आपूर्ति में परिवर्तन (ΔY_s) वास्तविक पूँजी में परिवर्तन (ΔK) और पूँजी की उत्पादकता (σ) के गुणनफल के बराबर होगा।

वास्तविक पूँजी में परिवर्तन को निवल निवेश के रूप में व्यक्त किया जाता है। इसीलिए, ΔK निवेश (I) को निरूपित करता है। समीकरण (4.8) में ΔK के स्थान पर I रखने पर हमें प्राप्त होता है –

$$\Delta Y_s = \sigma I \qquad \ldots (4.9)$$

समीकरण (4.7) और (4.9) के बीच साम्यावस्था हमें नियमित विकास कायम रखने के लिए स्थिति प्रदान करती है। आप देखेंगे कि साम्यावस्था में –

$$\Delta Yd = \Delta Y_s$$

अथवा $\Delta I/d = \sigma I$

वज्र–गुणन से हमें समीकरण (4.10) प्राप्त होता है –

$$\Delta I/I = \sigma d \qquad \ldots (4.10)$$

समीकरण (4.10) के अनुसार निवल निवेश की वृद्धि दर $\Delta I/I$ बचत करने की सीमांत प्रवृत्ति (d) और पूँजी की उत्पादकता (σ) के गुणनफल के बराबर होनी चाहिए। अनिवार्यतः स्थिर और नियमित विकास सुनिश्चित करने के लिए इस समानता को बनाए रखा जाना चाहिए।

नियमित वृद्धि बनाए रखने की इस स्थिति को समझाने के लिए डोमर एक संख्यात्मक उदाहरण देते हैं, यथा –

मान लीजिए कि

$\sigma = 25\ \%$ प्रति वर्ष

$d = 12\ \%$

$Y = \$\ 150$ बिलियन प्रति वर्ष

यदि पूर्ण नियोजन कायम रखना हो तो $150 \times \frac{12}{100} = \$\ 18$ बिलियन के बराबर राशि का निवेश किया जाना चाहिए। यह उत्पादक क्षमता को निवेश की गई राशि के σ गुना तक बढ़ा देगा, यथा –

$$150 \times \frac{12}{100} \times \frac{25}{100} = \$\ 4.5 \text{ बिलियन}$$

तथा राष्ट्रीय आय को भी उसी राशि तक बढ़ाना होगा। किंतु आय में सापेक्ष वृद्धि स्वयं राशि से विभाजित निरपेक्ष वृद्धि के बराबर होगी, यथा –

$$150 \text{ x } \frac{\frac{12}{100} x \frac{25}{100}}{150} = \frac{12}{100} \text{ x } \frac{25}{100} = 3\ \%$$

इस प्रकार पूर्ण नियोजन कायम रखने के लिए आय में 3 प्रतिशत प्रति वर्ष की दर से वृद्धि होनी चाहिए। यही 'विकास की संतुलन दर' कहलाती है। इस ''स्वर्णिम पथ'' से कोई भी विचलन चक्रीय उतार–चढ़ाव की ओर ले जाएगा। जब $\Delta I/I$ का मान σ d से अधिक होगा तो अर्थव्यवस्था में उत्कर्ष का अनुभव होगा। दूसरी ओर, यदि $\Delta I/I$ का मान σ d से कम होगा तो अर्थव्यवस्था में मंदी का प्रकोप देखा जाएगा।

4.4.2 मॉडल की अवधारणाएँ

डोमर मॉडल (DM) मूलतः निम्नलिखित अवधारणाओं पर आधारित है –

1. आय को गुणक के माध्यम से निवेश द्वारा निर्धारित किया जाता है। सरलता की दृष्टि से बचत–आय अनुपात को नियत माना जाता है।
2. उत्पादक क्षमता का निर्माण संभावित सामाजिक औसत निवेश उत्पादकता के अनुसार निवेश द्वारा किया जाता है। सरलता की दृष्टि से इसे भी नियत माना जाता है।
3. निवेश को उद्यमी के विश्वास के साथ–साथ उत्पादन वृद्धि से प्रेरित किया जाता है।
4. नियोजन वास्तविक उत्पादन और उत्पादक क्षमता के बीच अनुपात के रूप में व्यक्त 'उपयोग अनुपात' पर निर्भर करता है।
5. पिछला और वर्तमान निवेश किसी दिए गए अनुपात में वृहत्तर उत्पादक क्षमता दर्शा सकता है।

4.4.3 मॉडल के नीतिगत निहितार्थ

किसी भी अर्थव्यवस्था को हमेशा एक गंभीर दुविधा का सामना करना पड़ता है – यदि आज पर्याप्त निवेश नहीं हुआ तो आज बेरोजगारी होगी – परंतु यदि आज पर्याप्त निवेश किया गया है तो माँग बढ़ाने के लिए कल और भी अधिक निवेश की आवश्यकता होगी ताकि विस्तारित क्षमता का उपयोग किया जा सके और कल अत्यधिक पूँजी संचय से बचा जा सके – अन्यथा अत्यधिक संचय निवेश में गिरावट का कारण बनेगा, जो कि परसों व्यापार मंदी की ओर ले जाएगा। अतएव एक ही स्थान पर बने रहने के लिए अर्थव्यवस्था को तीव्र और तीव्रतर गति से चलना ही चाहिए, नहीं तो वह नीचे की ओर खिसक जाएगी।

बोध प्रश्न 2

1) विकास के डोमर मॉडल की प्रमुख विशेषताओं पर चर्चा कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2) नियमित वृद्धि कायम रखने के लिए आवश्यक शर्तें क्या हैं? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) विकास के डोमर मॉडल के नीतिगत निहितार्थ स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

4.5 हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल की तुलना

हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल एक दूसरे के साथ समानताएँ और असमानताएँ दोनों ही दर्शाते हैं। आइए, इन पर एक दृष्टि डालते हैं –

4.5.1 समानताएँ

ये दोनों मॉडल सारतः एक समान हैं। हैरोड का G ही डोमर का d है। हैरोड की अनुबद्ध विकास दर (G_w) ही डोमर की विकास की पूर्ण नियोजन दर ($d\sigma$) है, यथा –

हैरोड का $G_w = s/C_r \equiv$ डोमर का $d\sigma$

आइए, इसे सिद्ध करें।

$$d = \frac{S}{Y} \quad \text{अथवा} \quad S = dY \qquad \ldots (4.11)$$

$$\sigma = \frac{\Delta Y}{I} \quad \text{अथवा} \quad \Delta Y = I\sigma \qquad \ldots (4.12)$$

चूँकि S = I, समीकरण (4.12) में चर S के स्थान पर I को प्रतिस्थापित करने पर, हमें प्राप्त होता है –

$$\Delta Y = dY\sigma \qquad [\because S = dY]$$

$$\text{अथवा} \quad \frac{\Delta Y}{Y} = d\sigma \qquad \ldots (4.13)$$

$\therefore \quad G_w = d\sigma \qquad (\text{चूँकि } G_w = \frac{\Delta Y}{Y})$

दूसरे शब्दों में, हैरोड का Gw डोमर के $d\sigma$ के समान ही है, परंतु वास्तव में डोमर की वृद्धि दर $r = ds$ हैरोड की वृद्धि दर G_w ही है और डोमर का समीकरण $r = d\sigma$ हैरोड की स्वाभाविक विकास दर ही है। डोमर के मॉडल में चर s नव–सृजित पूँजी की वार्षिक उत्पादक क्षमता है, जो कि चर σ से अधिक है – यह निवेश की निवल संभावित सामाजिक औसत उत्पादकता दर्शाता है। यह श्रम एवं उत्पादन के अन्य कारकों की कमी ही है जिसने डोमर की विकास दर को $r = ds$ से घटाकर तक $r\ d\sigma$ तक गिरा दिया। चूँकि श्रम चर σ में शामिल है, डोमर की संभावित विकास दर हैरोड की स्वाभाविक दर के समान ही है। हम यह भी कह सकते हैं कि डोमर के मॉडल में चर σ से चर s की अधिकता हैरोड के मॉडल में G_n से G_w की अधिकता को व्यक्त करती है।

4.5.2 असमानताएँ

निस्संदेह, दोनों मॉडल एक समान अवधारणाओं पर आधारित हैं, फिर भी दोनों मॉडलों में कुछ अंतर देखे जाते है। इन असमानताओं को निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है –

तालिका 4.1: डोमर मॉडल और हैरोड मॉडल के बीच असमानताएँ

मापदंड	डोमर	हैरोड
1. दीर्घावधिक कठिनाई	''अल्प–निवेश सोखती वृद्धि''	विकास में विचलन लाता श्रमिक अभाव
2. श्रम आदान की स्थिति	कुछ श्रम का अभाव निवेश समाप्ति और निवेश निषेध को उकसा सकता है : वैकल्पिक घटक	विकास की स्वाभाविक दर का निर्धारक : मुख्य घटक
3. साम्यावस्था से अपकेंद्री बल	निरंतर अवमूल्यन झेलता निवेश प्रोत्साहन	अस्थिर समंजन प्रक्रिया
4. नियत पूँजी–उत्पादन अनुपात का कारण	असुविधाजनक माना गया	नियत ब्याज दर के कारण दर कम प्रतिस्थापन योग्यता, आदि
5. अर्थव्यवस्था की स्थिति	निष्क्रिय क्षमता अभिभावी	बेरोजगार श्रमिक आम बात

जब हम उनके नीतिगत निहितार्थों पर चर्चा करते हैं तो उक्त दोनों मॉडलों के बीच और अधिक अंतर सामने रख पाते हैं। डोमर का मॉडल पूँजी संचय और उत्पादन के पूर्ण–नियोजन वृद्धि दर के बीच प्रौद्योगिकीय संबंध की व्याख्या करता है। हैरोड का मॉडल पूँजी संचय और उत्पादन की पूर्ण–क्षमता वृद्धि दर के बीच व्यवहारिक अथवा मनोवैज्ञानिक संबंधों को दर्शाता है। डोमर का विश्लेषण गुणक के सिद्धांत पर आधारित है, जबकि हैरोड का विश्लेषण गतिवर्धन के सिद्धांत पर आधारित है। डोमर का मॉडल आर्थिक विकास में नियोजित निवेश की भूमिका का सुझाव देता है, जबकि हैरोड का मॉडल उत्प्रेरित निवेश पर जोर देता है।

4.6 हैरोड–डोमर विकास मॉडल

हमने ऊपर हैरोड मॉडल (HM) और डोमर मॉडल (DM) के विषय में अलग–अलग पढ़ा। अब तक हम समझ चुके हैं कि दोनों मॉडल सारतः एक समान ही हैं, हालाँकि ये अपने–अपने विवरण और नीतिगत निहितार्थों में भिन्न–भिन्न हो सकते हैं। अब हम अपने अध्ययन के एक ऐसे चरण में पहुँच गए हैं जहाँ हम इन दोनों मॉडलों को उस रूप में एकीकृत कर सकते हैं जिसे हैरोड–डोमर विकास मॉडल (HDM) के रूप में जाना जाने लगा है।

4.6.1 मॉडल का सारतत्व

हैरोड–डोमर मॉडल (HDM) के मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में निम्नानुसार प्रस्तुत किया जा सकता है –

1. निवेश ही इस मॉडल का मूल विषय है। यह दोहरी भूमिका निभाता है। एक ओर यह आय उत्पन्न करता है तो दूसरी ओर यह उत्पादक क्षमता का निर्माण करता है।
2. बढ़ी हुई क्षमता का परिणाम आय के व्यवहार के आधार पर वृहत्तर उत्पादन और वृहत्तर नियोजन में दिखाई पड़ता है।
3. आय के व्यवहार के संबंध में शर्तों को विकास दरों, यथा G, Gw और Gn, के संदर्भ में व्यक्त किया जा सकता है। इन विकास दरों के बीच समानता ही श्रम के पूर्ण नियोजन और पूँजीगत स्टॉक के पूर्ण उपयोग को सुनिश्चित करेगी।
4. ये शर्तें, बहरहाल, विकास की केवल एक नियमित रेखा को ही निर्दिष्ट करती हैं। वास्तविक विकास दर अनुबद्ध विकास दर से भिन्न हो सकती है। यदि वास्तविक वृद्धि दर अनुबद्ध वृद्धि दर से अधिक है तो अर्थव्यवस्था संचयमान मुद्रास्फीति का अनुभव करेगी। यदि वास्तविक विकास दर अनुबद्ध विकास दर से कम है, तो अर्थव्यवस्था संचयमान अपस्फीति की ओर अग्रसर होगी।
5. व्यापार चक्रों को नियमित विकास के पथ से विचलन के रूप में देखा जाता है। वैसे ये विचलन अनिश्चित काल तक नहीं चल सकते – इनकी उच्च और निम्न सीमाओं पर निबाध होते हैं। ''पूर्ण नियोजन सीमा'' एक उच्च सीमा के रूप में कार्य करती है और स्वायत्त निवेश एवं उपभोग एक निम्न सीमा के रूप में कार्य करते हैं। वास्तविक विकास दर इन दो सीमाओं के बीच ही उतार–चढ़ाव दर्शाती है।

4.6.2 मॉडल की सीमाएँ

हैरोड–डोमर मॉडल (HDM) आर्थिक विकास के महत्वपूर्ण निर्धारक तत्वों (और नीतिगत निहितार्थ) पर प्रकाश डालता है, तथापि परवर्ती आलोचना से मुक्त नहीं हैं। अतएव निम्नलिखित आधारों पर इस मॉडल की आलोचना की गई है –

1. यह मॉडल प्रमुख मापदंडों को ही मानता है, जैसे कि बचत की प्रवृत्ति और पूँजी–उत्पादन अनुपात का नियत होना। वास्तव में, ये दीर्घावधि में ही परिवर्तन की संभावना रखते हैं। इन मापदंडों में परिवर्तन से ही नियमित विकास की आवश्यकताओं में परिवर्तन आता है।
2. यह मॉडल चरों के रूप में केवल कुल राशियों को ही शामिल करता है। इस तरह की कुल राशियों के आधार पर निर्मित कोई भी मॉडल क्षेत्रों के बीच के अंतर–संबंधों को नहीं दर्शा सकता है और इस प्रकार यह उन संरचनात्मक परिवर्तनों को प्रदर्शित करने के लिए नहीं है जो किसी विकासशील अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास का एक आधारभूत पहलू का गठन करते हैं। अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों का सामंजस्यपूर्ण विकास नियमित विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होता है। नियमित विकास से विचलन विभिन्न क्षेत्रों के विकास के बीच सामंजस्य के अभाव के कारण हो सकता है, भले ही स्थिरता के लिए समस्त अपेक्षाओं को पूरा कर दिया गया हो।
3. यह मॉडल उत्पादन फलन को निश्चित मानता है और इसीलिए विभिन्न कारकों के बीच प्रतिस्थापन की कोई गुंजाइश नहीं होती है। वास्तव में उत्पादन के विभिन्न कारकों को, कम से कम किसी निश्चित सीमा तक, एक दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापित किया जा सकता है। विभिन्न कारकों के बीच प्रतिस्थापन से अर्थव्यवस्था का सुनम्यता बढ़ती है और इस प्रकार नियमित विकास के पथ से संचयी विचलन की संभावना कम हो जाती है।
4. यह मॉडल केवल नियमित विकास की अपेक्षाओं पर ही ध्यान देता है और विकास दर की उपेक्षा करता है। ऐसा करना विकसित देशों के लिए अधिक उपयोगी होता है, जिनका मुख्य उद्देश्य स्थिरता ही होता है, न कि विकास दर। इसके विपरीत, विकासशील देश विकास दर में अधिक रुचि रखते हैं। उन्हें ऐसी नीतियों का पालन करने में कोई आपत्ति नहीं होगी जो उतार–चढ़ाव पैदा करती हों, बशर्ते वे विकास की दर को भी सार्थक रूप से बढ़ा देती हों।
5. यह मॉडल राजकोषीय तटस्थता की धारणा पर आधारित और किसी भी विकसित अर्थव्यवस्था के लिए प्रगतिशील साम्यावस्था की शर्तों को इंगित करने के लिए अभिकल्पित पूर्ण रूप से अहस्तक्षेप की नीति ही है। इसी कारण नीतिगत निहितार्थ विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए बहुत प्रासंगिक नहीं हैं।

उपर्युक्त सीमाओं के बावजूद हैरोड–डोमर मॉडल (HDM) एक महत्वपूर्ण मॉडल है क्योंकि यह कीन्स के स्थिर अल्पावधिक बचत एवं निवेश सिद्धांत को गतिशील और चिरंतन बनाने के एक प्रेरणादायी प्रयास का प्रतिनिधित्व करता है।

बोध प्रश्न 3

1) हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल के बीच समानताएँ बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल में अंतर स्पष्ट करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) विकास के हैरोड–डोमर मॉडल की मूलभूत विशेषताएँ क्या हैं? इस मॉडल की सीमाएँ भी बताएँ।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.7 सारांश

हैरोड–डोमर विकास मॉडल को अलग–अलग, मगर साथ ही, दो अर्थशास्त्रियों द्वारा विकसित किया गया था। हैरोड मॉडल और डोमर मॉडल दोनों ने आर्थिक विकास की प्रक्रिया में बचत और निवेश के महत्व को सामने रखा।

दोनों मॉडलों ने नियमित विकास के लिए शर्तों को निर्धारित करने का प्रयास किया – इन शर्तों को पूरा न करने से असंतुलन पैदा होगा, जिसके परिणामस्वरूप मुद्रास्फीति और अपस्फीति अंतराल उत्पन्न होगा।

यद्यपि दोनों मॉडल अपने–अपने विवरण में भिन्न थे, वे सार में एक समान थे। इसीलिए दोनों मॉडल एकीकृत हैं, जिन्हें संयुक्त कर 'विकास का हैरोड–डोमर मॉडल' कहा जाता है।

मॉडल को उन्नत बाजार अर्थव्यवस्थाओं के संदर्भ में विकसित किया गया था। किंतु विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में योजना मॉडल तैयार करने में इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता रहा है।

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा संकेत

बोध प्रश्न 1

1) देखें पाठांश 4.3.1
2) देखें पाठांश 4.3.2
3) देखें पाठांश 4.3.4

बोध प्रश्न 2

1) देखें पाठांश 4.4.1
2) देखें पाठांश 4.4.2
3) देखें पाठांश 4.4.3

बोध प्रश्न 3

1) देखें पाठांश 4.5.1
2) देखें पाठांश 4.5.2
3) देखें पाठांश 4.6.1 और 4.6.2

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY